Course -B.Sc Hons part-1

Subject- Hindi composition(100marks)(हिन्दी रचना)

UG

Topics - राष्ट्रीय सेवा योजना(एन एस एस) विषय पर निबन्ध लिखें।

Dr.Prafull kumar HOD Hindi Department RRS College Mokama PPU Patna.

एन एस एस केंद्र सरकार का कार्यक्रम है परन्तु केंद्र सरकार,राज्य / संघ शासित प्रदेश और शैक्षिक संस्थान इस कार्यक्रम के 3 स्तंभ हैं। केंद्र और राज्यों के बीच प्रभावी सहयोग / साझेदारी के फलस्वरूप राज्यों और शैक्षिक संस्थानों में कार्यक्रम का कार्यान्वयन संभव हो रहा है।

भारतीय युवा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और चरित्र के साथ सामाजिक सामुदायिक सेवा भावनाओं के विकास के प्राथमिक उद्देश्य से राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) को 1969 में 37 विश्वविद्यालयों में शुरू किया गया था जिसमें लगभग 40,000 स्वयंसेवकों को शामिल किया गया था।तब से एनएसएस के अंतर्गत आने वाले शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी हो रही है। अब तक लगभग,4.78 करोड़ छात्रों को एन एस एस से लाभ हुआ है।किसी राष्ट्र के निर्माण में युवाओं का बहुत बड़ा योगदान होता है। आज देश में तकरीबन 65 फीसदी जनसंख्या युवा है। इस मद्देनजर यह देश के लिए सौभाग्य की बात है कि देश का चौमुखी विकास एकसाथ हो सकता है। इसके लिए आजादी के समय गांधी जी ने युवाओं को राष्ट्रीय सेवा से जोड़ने पर विशेष बल दिया था। आजादी के पश्चात विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में पहली बार स्वैच्छिक आधार पर शैक्षिक संस्थाओं में राष्ट्रीय सेवा आरंभ करने की सिफारिश की।

एन एस एस - पंजीयन

इसमें पंजीयन के लिए बी०ए०,बी०एस-सी०पार्ट वन एवं पार्ट 2 के विद्यार्थी योग्य माने जाते हैं। खेल कूद में शामिल छात्र-छात्राओं का पंजीकरण इस इकाई में नहीं किया जा सकता है। पंजीकरण के लिए अपने कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी से संपर्क करें।पंजीकरण फार्म भरकर पंजीकरण करायें। पंजीकरण नि:शुल्क होता है।

सेवा योजना के निर्धारित कार्यक्रम

एन एस एस स्वयंसेवी को प्रति वर्ष कम से कम 120 घंटे अर्थात् दो साल में 240 घंटे की सेवा करना अनिवार्य होता है। यह कार्य एन एस एस शाखाओं द्वारा अपनाए गए गांवों/कस्बों या कॉलेज परिसर में किया जाता है। अध्ययन के घंटों के बाद इसे सप्ताहांत/छुट्टियों के दौरान किया जाता है। इसके अलावा, प्रत्येक एन एस एस इकाई स्थानीय समुदायों को शामिल करके कुछ विशेष परियोजनाओं के साथ छुट्टियों में अपनाए गए गांवों या शहरी कस्बों में 7 दिनों की अवधि के विशेष शिविर में करते हैं।प्रत्येक स्वयंसेवक सेवा को 2-वर्षीय की अवधि के दौरान एक बार विशेष शिविर में भाग लेना आवश्यक होता है। इस प्रकार, एक इकाई से लगभग 50 प्रतिशत एन एस एस स्वयंसेवी विशेष शिविर में भाग लेते हैं।

एन एस एस इकाइयाँ उन गतिविधियों का आयोजन कर सकती है जो समाज के लिए प्रासंगिक है। समाज की जरूरतों के अनुसार शिक्षा और साक्षरता,स्वास्थ्य,परिवार कल्याण और पोषण,स्वच्छता,पर्यावरण-संरक्षण,सामाजिक सेवा कार्यक्रम,महिलाओं की स्थिति में सुधार,उत्पादनोन्मुख कार्यक्रम,आपदा राहत और पुनर्वास संबंधी कार्यक्रम,सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान,डिजिटल भारत, कौशल भारत,योग इत्यादि प्रमुख कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता पैदा करना आदि शामिल है।

है।

स्वयं के व्यक्तित्व को विकसित करने के अलावा एनएसएस स्वयंसेवियों ने समाज के प्रति महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब तक, एनएसएस इकाइयों ने देश भर में अनेक गांवों/कस्बों में हजारों विशेष दौड़ का आयोजन किया है। एनएसएस स्वयंसेवियों ने श्रमदान सेवा की और, लाखों यूनिट रक्त दान किया। स्वयंसेवकों ने स्वास्थ्य, आंख और टीकाकरण से संबंधित हजारों शिविर आयोजित किए। विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों और सामाजिक मुद्दों पर रैलियों के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है। एनएसएस स्वयंसेवकों ने लाखों बच्चों को पल्स पोलियो टीकाकरण की सुविधा प्रदान की। स्वयंसेवी स्वच्छ भारत मिशन, डिजिटल साक्षरता का प्रसार और योग को लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

युवा और खेल मामलों का मंत्रालय बड़े पैमाने पर एनएसएस के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है। अभी तक एनएसएस में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या 10% से कम है। एनएसएस के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाने, स्व-वित्तपोषण इकाइयों की स्थापना करने की कोशिश की जा रही है। छात्रों को एनएसएस के प्रति प्रेरित करने के लिए, यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों को एनएसएस को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू करने के लिए एक एडवाजरी जारी की है।

एनएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के लिए मंत्रालय उन्हें प्रचारित भी करता है। इसके तहत राष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक एनएसएस पुरस्कार दिए जाते हैं जिसमें एनएसएस स्वयंसेवकों को गणतंत्र दिवस परेड, अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर, साहसिक कैंप आदि में भाग लेने का अवसर दिया जाता है। एनएसएस के तहत बहुत अच्छे कार्य किए जा रहे हैं और इसमें और बहुत अच्छे कार्य करने की क्षमता है। छात्र और एनएसएस स्वयंसेवी युवा भारतीय हैं और वे समाज के सबसे आदर्श वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत सरकार ने “सबका साथ, सबका विकास” के सिद्धांत के बाद एक एकजुट, मजबूत और आधुनिक भारत बनाने के लिए “एक भारत, श्रेष्ठ भारत ”के मिशन पर कार्य शुरू किया है। भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए 'मेक इन इंडिया'

अभियान शुरू किया है। डिजिटल रूप से सशक्त समाज और मजबूत अर्थव्यवस्था में बदलने की कोशिश है।

बुनियादी ढांचे के विकास, स्वच्छ और हरित भारत के निर्माण के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'स्वच्छ गंगा मिशन' की शुरूआत की गयी है।देश के विकास में गति लाने के लिए एक निरंतर और निर्धारित अभियान चल रहा है। इस अभियान में एनएसएस स्वयंसेवियों के साथ-साथ लाभार्थी भी योगदान दे सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य

इसका उद्देश्य 'सेवा के माध्यम से शिक्षा' है। एनएसएस की वैचारिक उन्मुखता महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित है।राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह कोणार्क के सूर्य मंदिर का चक्र है। जिसमें लगे 24 पहिये 24 घंटे का तथा 8 तिल्लियां 8 प्रहर को दर्शाती हैं।एनएसएस का आदर्श वाक्य "नॉट मी, बट यू" है। एक एनएसएस स्वयंसेवी 'स्वयं' से पहले 'समुदाय' को स्थान देता है। यह शिक्षा के तीसरे आयाम का हिस्सा है।शैद्धान्तिक शिक्षा के साथ निरंतर व्यावहारिक समाजोपयोगी शिक्षा देने में विश्वविद्यालय कितना सक्रिय है,कितना सक्षम है वह एन एस एस की सफलता में निहित है।टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल ससाइंसे द्वारा किए गए एक मूल्यांकन अध्ययन में एनएसएस के महत्व को रेखांकित किया गया है कि एनएसएस भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक शानदार और वैचारिक रूप से प्रेरित योजना है और यह दुनिया में युवाओं के कार्यक्षेत्र में सबसे बड़ा प्रयोग है। यहाँ तक कि, टीआईएसएस ने सिफारिश की है कि सभी व्यक्तिगत और निजी वित्तपोषित विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और संस्थानों में एनएसएस को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए और इसे पाठ्यक्रम के भाग के रूप में एकीकृत करना चाहिए।

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस पहली बार 24 सितंबर, सन 1969 ई. को मनाया गया जब राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थापना की गई थी। तब से हर साल 24 सितंबर को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया जाता है।

एनएसएस: राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए युवाओं के पास एक सुअवसर है। साथ ही इसके लिए पुरस्कार भी दिये जाते हैं-

प्रथम पुरस्कार: 5,00,000 रुपये (एनएसएस कार्यक्रम विकास के लिए), विश्वविद्यालय/ +2 परिषद को एक ट्रॉफी के साथ। कार्यक्रम समन्वयक को प्रमाणपत्र एवं रजत पदक।

द्वितीय पुरस्कार: 3,00,000 रुपये (एनएसएस कार्यक्रम विकास के लिए), विश्वविद्यालय/ +2 परिषद को ट्रॉफी के साथ। कार्यक्रम समन्वयक को प्रमाणपत्र एवं रजत पदक।

आज यह अखिल भारतीय कार्यक्रम बन गया है।एनएसएस के अंतर्गत आने वाले शैक्षणिक संस्थानों की संख्या में प्रतिवर्ष बढ़ोत्तरी हो रही है। इसकी स्थापना के बाद से, 4.78 करोड़ छात्रों को एनएसएस से लाभ हुआ है।

युवा और खेल मामलों का मंत्रालय बड़े पैमाने पर एनएसएस के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है। अभी तक एनएसएस में शामिल होने वाले छात्रों की संख्या 10% से कम है। एनएसएस के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। एनएसएस के लिए स्व-वित्तपोषण इकाइयों की स्थापना की भी अनुमति दे दी गयी है। छात्रों को एनएसएस के प्रति प्रेरित करने के लिए, यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों को एनएसएस को क्रेडिट के साथ एक वैकल्पिक विषय के रूप में शुरू करने के लिए एक एडवाजरी जारी की है। एनएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के लिए मंत्रालय उन्हें प्रचारित भी करता है। इसके तहत राष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक एनएसएस पुरस्कार दिए जाते हैं जिसमें एनएसएस स्वयंसेवकों को गणतंत्र दिवस परेड, अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर, साहसिक कैंप आदि में भाग लेने का अवसर दिया जाता है।

एन एस एस के तहत बहुत अच्छे कार्य किए जा रहे हैं और इसमें और बहुत अच्छे कार्य करने की क्षमता है। छात्र और एनएसएस स्वयंसेवी युवा भारतीय हैं और वे समाज के सबसे आदर्श वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुख्यमंत्री श्री

नरेन्द्र मोदी जी के आयाम नेतृत्व में भारत सरकार ने “सबका साथ, सबका विकास” के सिद्धांत के बाद एक एकजुट, मजबूत और आधुनिक भारत बनाने के लिए “एक भारत, श्रेष्ठ भारत ”के मिशन पर कार्य शुरू किया गया है।कई महत्वपूर्ण पहलों की शुरूआत की गई है। भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए 'मेक इन इंडिया' अभियान शुरू किया गया है। भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और मजबूत अर्थव्यवस्था में बदलने की कोशिश है।डिजिटल पेमेंट्स को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान चल रहा है।भारतीय अर्थव्यवस्था में अवसर प्रदान करने और विदेशों में अवसरों के लिए भारतीयों को तैयार करने के लिए 'स्किल इंडिया' की शुरूआत की गयी है।बुनियादी ढांचे के विकास के लिए स्मार्ट सिटीज प्रोजेक्ट सहित कई पहलों की शुरुआत की गई है।स्वच्छ और हरित भारत के निर्माण के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'स्वच्छ गंगा मिशन' की शुरूआत की गयी है।हमारे समाज में प्रगति लाने के लिए एक निरंतर और निर्धारित अभियान चल रहा है।इन अभियानों में एनएसएस स्वयंसेवी भी योगदान दे सकते हैं।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) द्वारा किए गए एक मूल्यांकन अध्ययन में एनएसएस के महत्व को रेखांकित किया गया। अपनी अध्ययन रिपोर्ट में, टीआईएसएस ने निष्कर्ष निकाला कि एनएसएस भारत सरकार द्वारा शुरू की गयी एक शानदार और वैचारिक रूप से प्रेरित योजना है और एनएसएस दुनिया में युवाओं के कार्यक्षेत्र में सबसे बड़ा प्रयोग है। यहाँ तक कि, टीआईएसएस ने सिफारिश की है कि सभी व्यक्तिगत और निजी वित्तपोषित विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और संस्थानों में एनएसएस को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए और इसे पाठ्यक्रम के भाग के रूप में एकीकृत करना चाहिए।

राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा में लंबे समय से एन एस एस की एक इकाई(100 स्वयंसेवी छात्र-छात्राऐं प्रत्येक सत्र) कार्य कर रही है।इसके कार्यक्रम पदाधिकारीगण ने इसकी गतिविधियों को आगे बढ़ाने का सराहनीय कार्य किया

है। वर्तमान कार्यक्रम पदाधिकारी- डॉ०प्रफुल्ल कुमार (विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग) एवं सहायक-(प्रयोगशाला प्रदर्शक श्री अशोक कुमार (रसायन शास्त्र विभाग) तथा सहयोगी श्री तारकेश्वर प्रसाद ने वर्ष 2014 से लेकर अब तक इस इकाई की गतिविधियों को नया आयाम दिया और ऐसे व्यवस्थित कार्यक्रम एवं शिविरों का आयोजन किया है जिसकी सराहना सभी लोग करते रहे हैं।इस इकाई ने मगध विश्वविद्यालय बोधगया एवं पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना में राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा का नाम रौशन किया है। महाविद्यालय के नैक मूल्यांकन में एनएसएस की इकाई का बहुत बड़ा योगदान रहा है। नैक पीयर टीम ने एन एस एस के स्वयंसेवकों की सक्रियता की भूरी- भूरी प्रशंसा की और नैक मूल्यांकन के लिए अच्छे अंक प्रदान की है जिससे महाविद्यालय को बी ग्रेड मिलने में सहायता मिली। हमारे महाविद्यालय के स्वयंसेवी छात्र-छात्राओं ने कई गांवों में शिविर लगाकर वहां शिक्षा स्वच्छता स्वास्थ्य, समाज सुधार अभियान चलाया है। वहां की सामाजिक आर्थिक विकास की कड़ियां जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। अपने महाविद्यालय स्वयंसेवी विद्यार्थियों ने कोरोना काल में भी लोगों को जागरूक करने और सहायता करने का सराहनीय कार्य किया है। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए जिस तत्परता की आवश्यकता है वह यहाँ के विद्यार्थियों ने अब तक निभाई है।

****